छोटा मेमना

छोटा मेमना

ओ, पवन, धीरे चलो मेरी भेड़ों पर
शेर से दूर
और मेमनों के ऊपर
धीरे चलो, धीरे चलो.

घास के ऊपर
और सुंदर फूलों पर भी
धीरे चलो, धीरे चलो.

ओह, पवन, धीरे चलो नीले आकाश तले
सफेद बर्फ के ऊपर
और काली भेड़ो पर.
धीरे चलो, धीरे चलो.

पहाड़ों के ऊपर
जहाँ हरी घास समाप्त हो जाती है
और बर्फ की परत शुरू होती हो,
नन्हा गड़रिया बैठा
यह गीत गा रहा था.

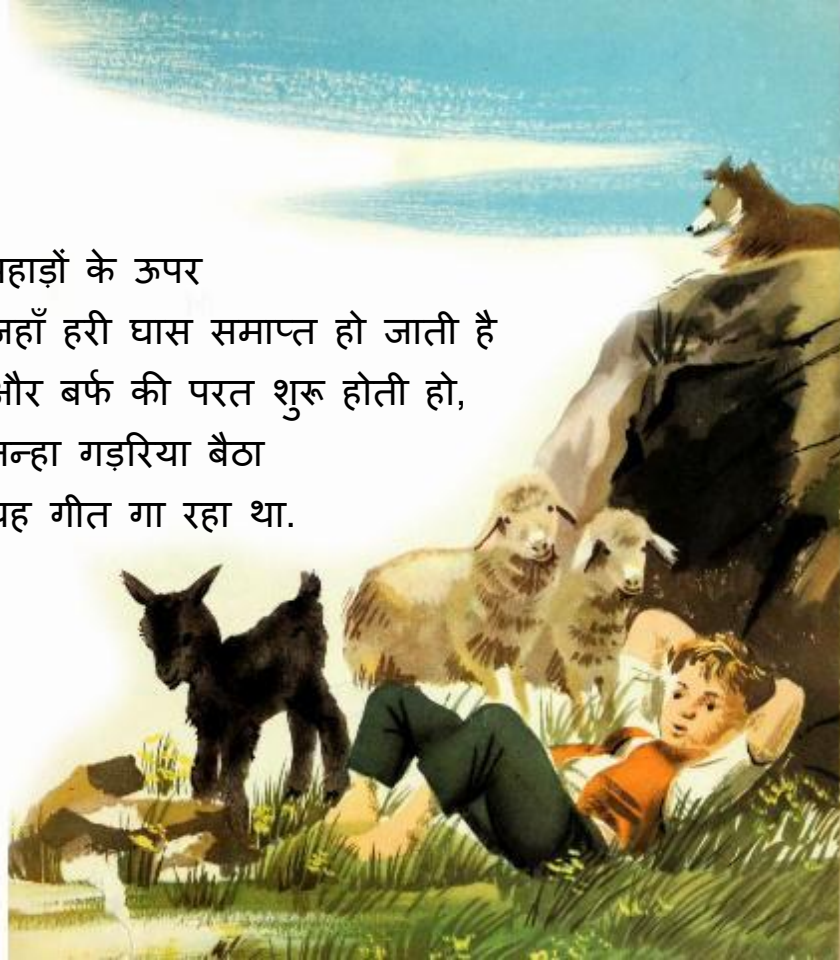

नीचे हरी घास में भेड़ें सिमट कर एक साथ खड़ी थीं-वहाँ मेमनों का और उनकी माताओं का स्लेटी रंग को हिलता-डुलता एक बड़ा समूह था. और उस हिलते-डुलते स्लेटी, गुदगुदे झुंड में एक छोटा, काला धब्बा भी था.

यह एक काली भेड़ थी जो हर झुंड में पैदा होती थी. एक नन्हा, प्यारा काला मेमना जो अपनी छोटी, अकड़ी हुई टाँगों को झटक रहा था - स्लेटी मेमनों के साथ उछल-कूद कर रहा था, वैसे ही जैसे सब नन्हे बच्चे करते हैं.

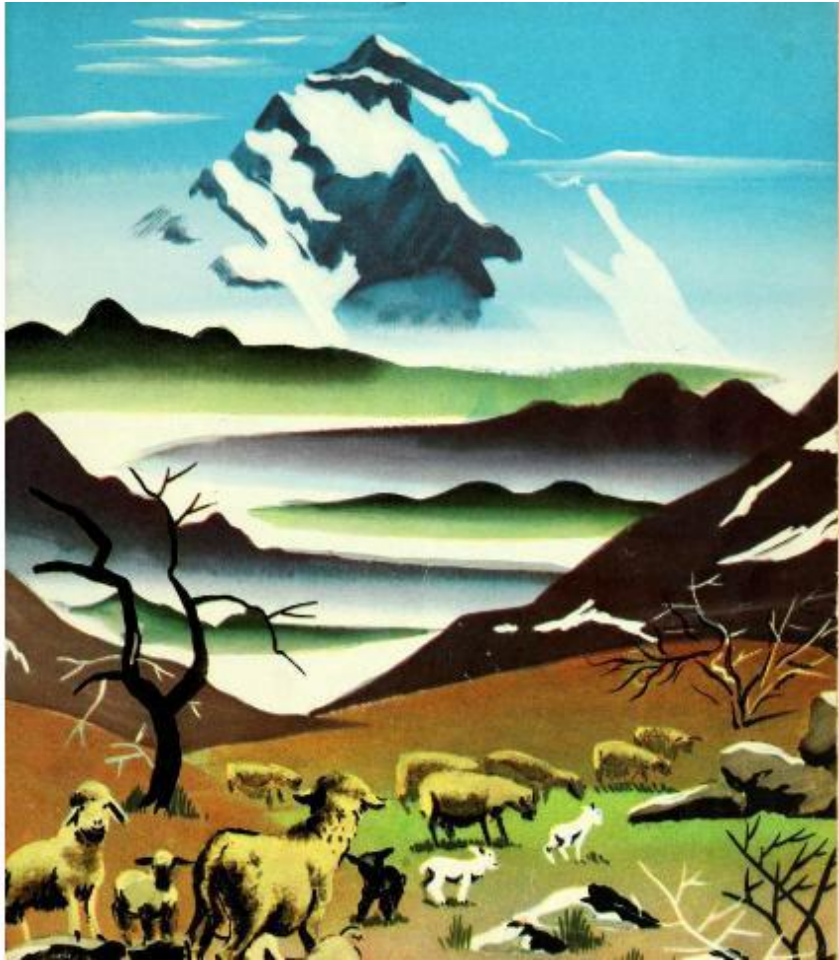

बुद्धू मेमनों को देख कर नन्हा गड़रिया हँसने लगा. जब मेमने हरी घास की तलाश में इधर-उधर भटक जाते तो उनकी मातायें उनकी ओर देख कर उन्हें पुकारती थीं और वापस बुलाती थीं. गड़रिया भी भेड़ों की पुकार सुनता था.

जैसे-जैसे बर्फ पिघलने लगी, पहाड़ के ऊपर, और ऊपर, चोटी की ओर, घास उगने लगी.

और हर दिन नन्हा गड़रिया अपनी भेड़ों को पहाड़ के ऊपर, और ऊपर, चरागाहों में ले आता.

उस दिन हल्की गर्म हवा बह रही थी.

नई घास और बर्फ से निकलने वाले पहाड़ी फूलों की सुगंध से हवा महक रही थी.

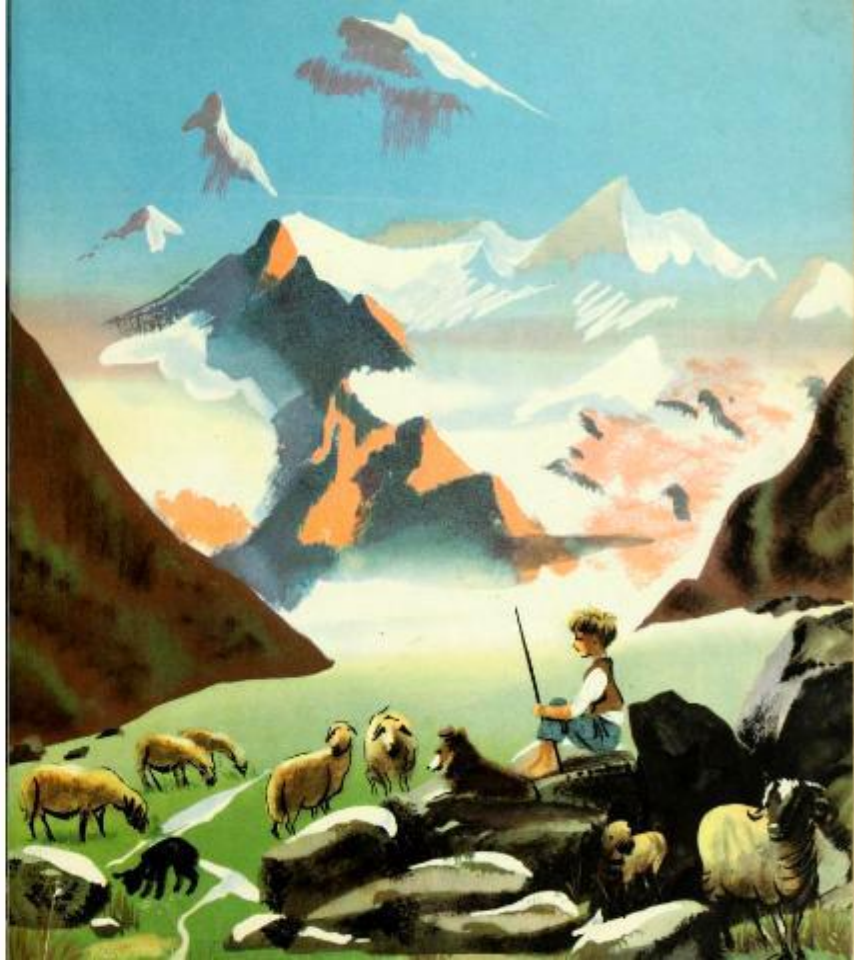

और उस हरी-भरी चरागाह में गड़रिये ने उगते हुए सूरज की नर्म-नर्म धूप में अपनी भेड़ों को देखा. वह निगरानी रख रहा था कि कोई भेड़ झुंड से अलग होकर इधर-उधर भटक न जाये. और अगर भेड़ें भटक जातीं तो सीटी बजा कर वह अपने कुत्ते को उन्हें वापस लाने के लिए संकेत करता था.

वह छोटी, काली भेड़ हमेशा अकेले ही यहाँ-वहाँ फुदकती रहती थी.

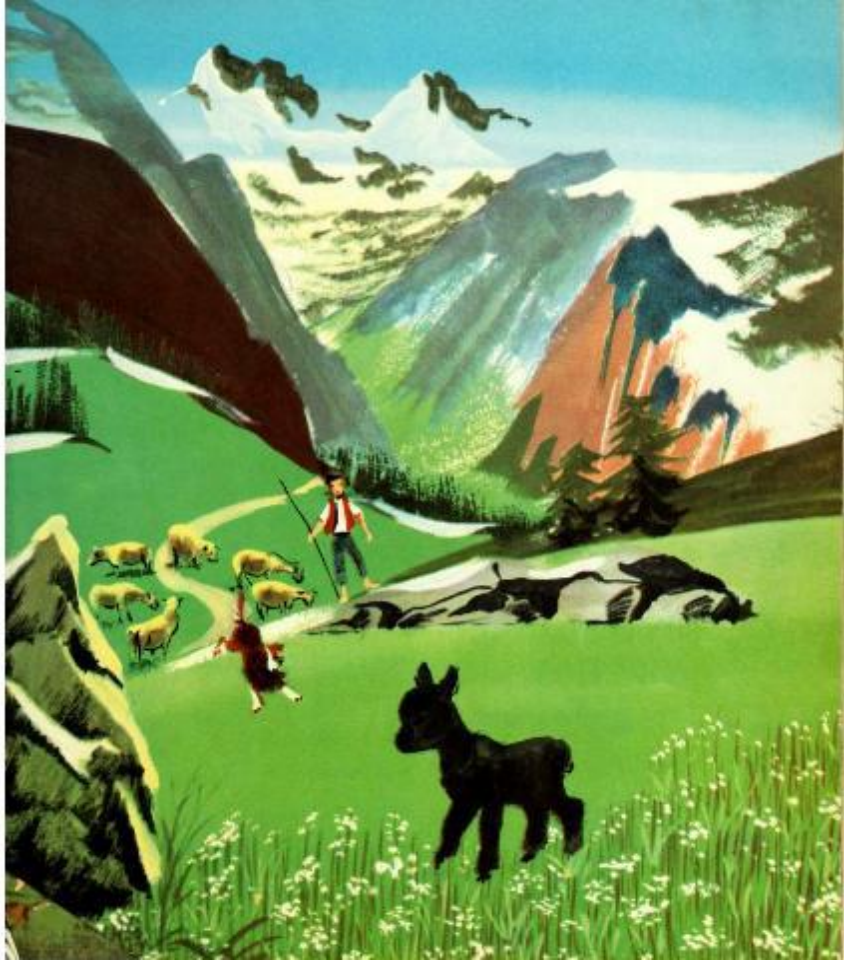

और जैसे ही धूप तेज़ हुई वह भेड़ों को पहाड़ के और ऊपर ले गया. छोटी, काली भेड़, डांवांडोल सी, झुंड के सबसे पीछे आ रही थी.

वह पहाड़ की चोटियों के बीच स्थित छोटी, हरी-भरी घाटी में आ गए.

यह घाटी पहाड़ों में उस ऊँचाई पर थी जहाँ वह पहले कभी न आए थे.

वहाँ की घास इतनी नर्म और हरी थी कि भेड़ें मेमनों को पुकारना भूल गईं और घास के नये, कोमल तिनकों को चबाने में मग्न हो गईं.

नन्हा गड़रिया पहाड़ के एश वृक्ष की एक डाल छील कर अपने लिए नई सीटी बनाने में व्यस्त हो गया.

उसके कुत्ते को नींद आ रही थी. धूप में तपी हुई एक चट्टान पर, एक छिपकली के बगल में लेटा, वह ऊँघने लगा.

छोटी, काली भेड़ को उन्होंने उछलते-कूदते हुए, अकेले दूर जाते देखा ही नहीं.

उन्होंने देखा ही नहीं कि अपने खुरों को दायें-बायें मटकाते हुए वह पहाड़ के ऊपर चढ़ कर घाटी के दूसरी ओर जा रहा था.

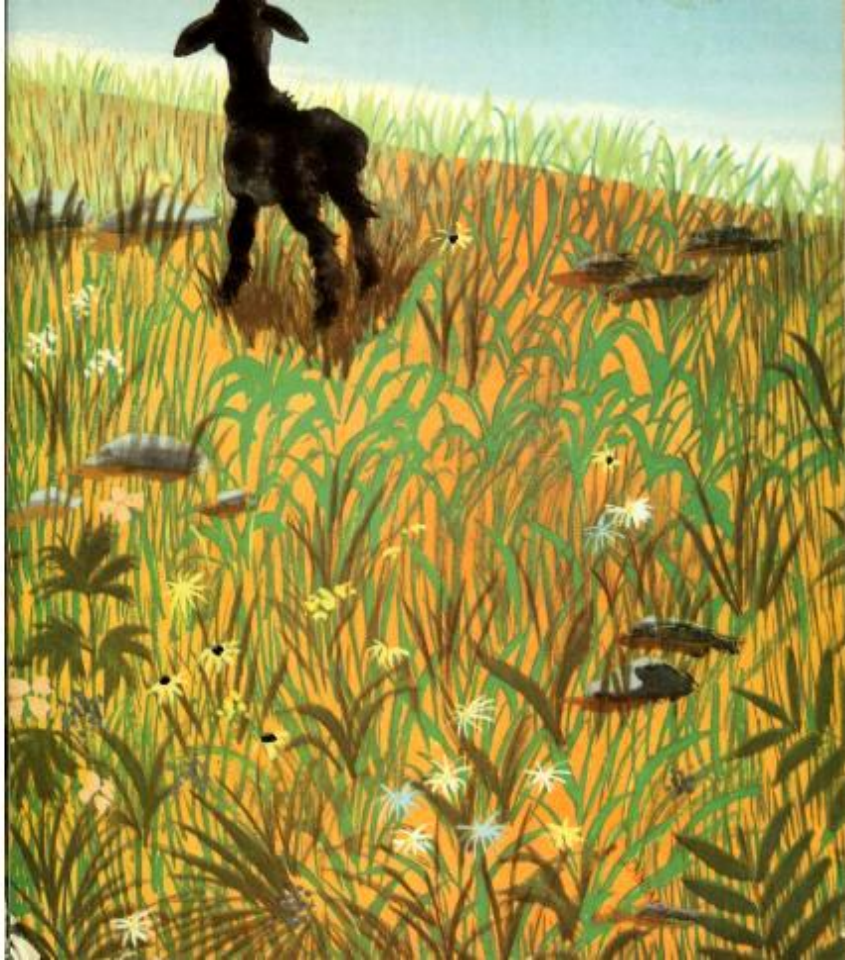

और जब उस मेमने की माँ ने उसे वापस बुलाने के लिए सिर उठाया तो वह कहीं दिखाई नहीं दिया.

और जब गड़रिये ने उसे ढूँढ़ा तो वह मेमना उसे दिखाई नहीं दिया.

और जब अनुभवी कुत्ते को उसके पीछे दौड़ाया गया तो वह उसे ढूँढ़ न पाया.

छोटी, काली भेड़ को इस बात का पता न था.

लेकिन छोटी, काली भेड़ भटक गई थी. पर उस छोटी काली भेड़ को तो यह लग रहा था कि, रास्ता भूल कर, अन्य भेड़ें और गड़रिया कहीं खो गए थे.

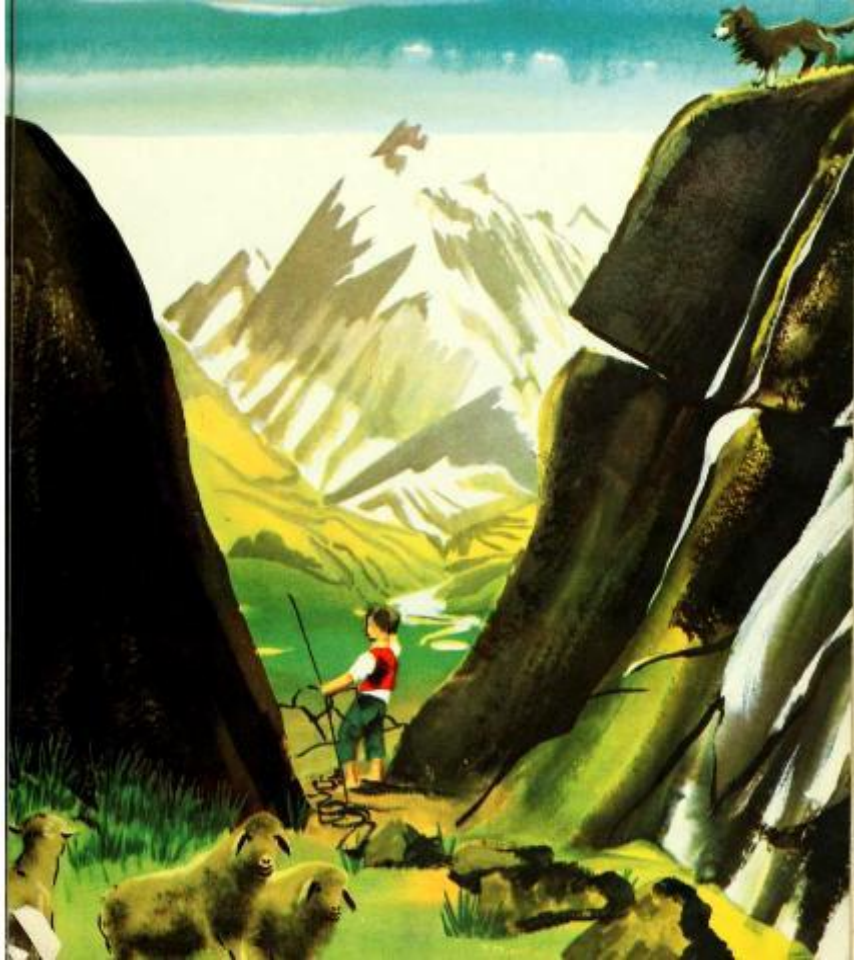

उसकी माँ इधर भागी और फिर उधर भागी-

बा, बा, बा-

वह इतनी घबरा गई थी कि उसको देख कर शीघ्र ही बाकी भेड़ें भी चिल्लाने लगीं.

बाआआआआआआआ

बाआ बाआ

और छोटे मेमनों ने अपनी ऊँची, काँपती आवाज़ में उत्तर दिया.

बाआआआआ

बाआ-बाआ

बाआआआआ.

लेकिन खोयी हुई छोटी, काली भेड़ ने कोई उत्तर न दिया. और यद्यपि नन्हे गड़रिये ने कई बार पुकारा और अपनी सीटी बजाई और उसका कुत्ता दौड़ता रहा, सूँघता रहा और भोंकता रहा, वह छोटी, काली भेड़ को ढूँढ़ न पाये.

और छोटी, काली भेड़ लौट कर न आई.

उसे तो अकेले घूमने में बड़ा मज़ा आ रहा था.

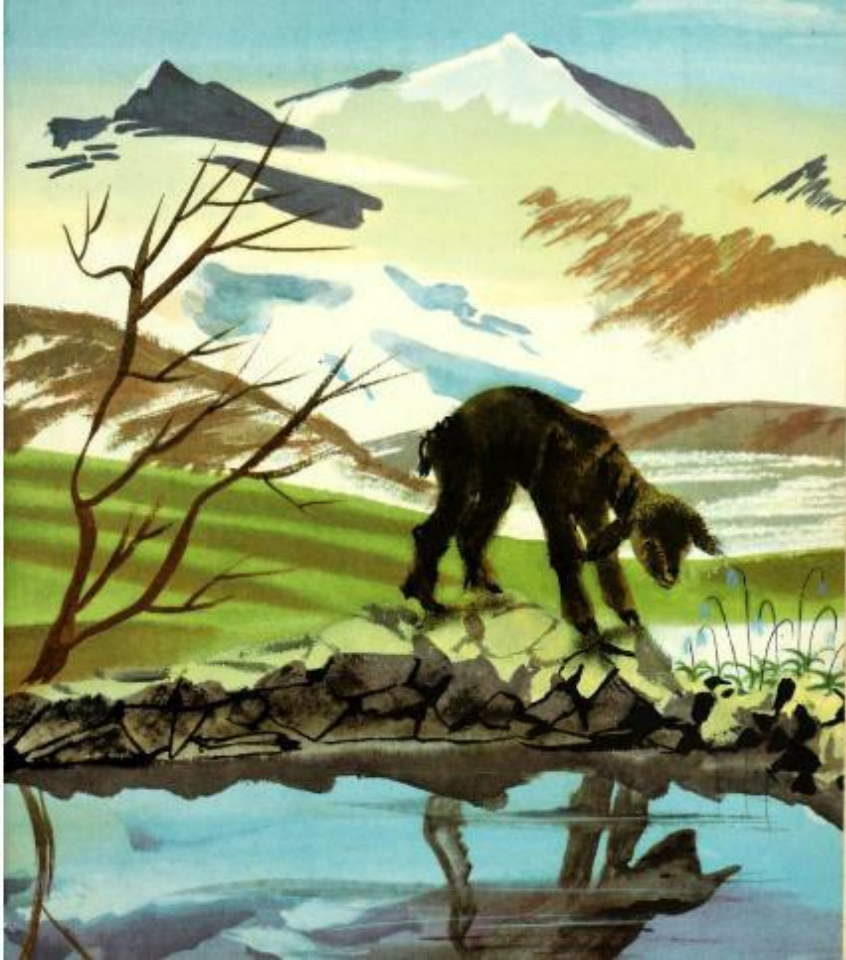

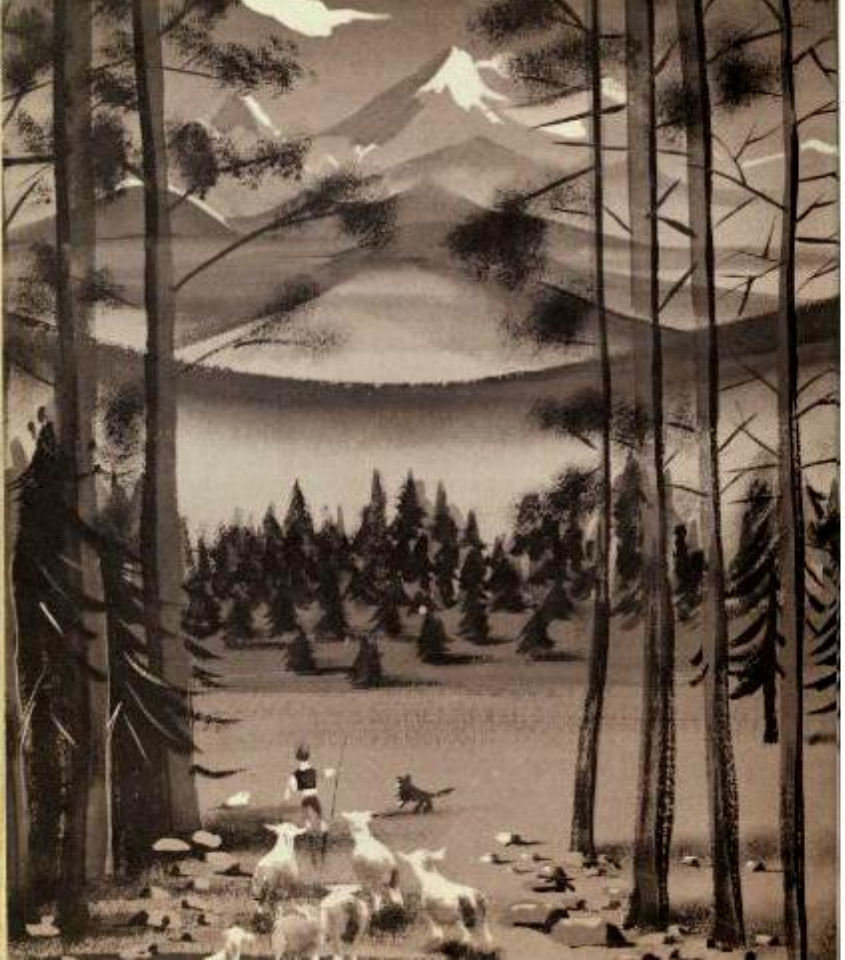

और फिर सूरज अस्त होने लगा. जितनी देर नन्हा गड़रिया प्रतीक्षा कर सकता था उसने प्रतीक्षा की. अँधेरा होने से पहले उसे बाकी भेड़ों को नीचे घाटी में वापस ला जाना था.

यही एक गड़रिये को करना होता है. और यही उस नन्हे गड़रिये ने किया.

वह भेड़ों को वापस नीचे घाटी में ले आया.

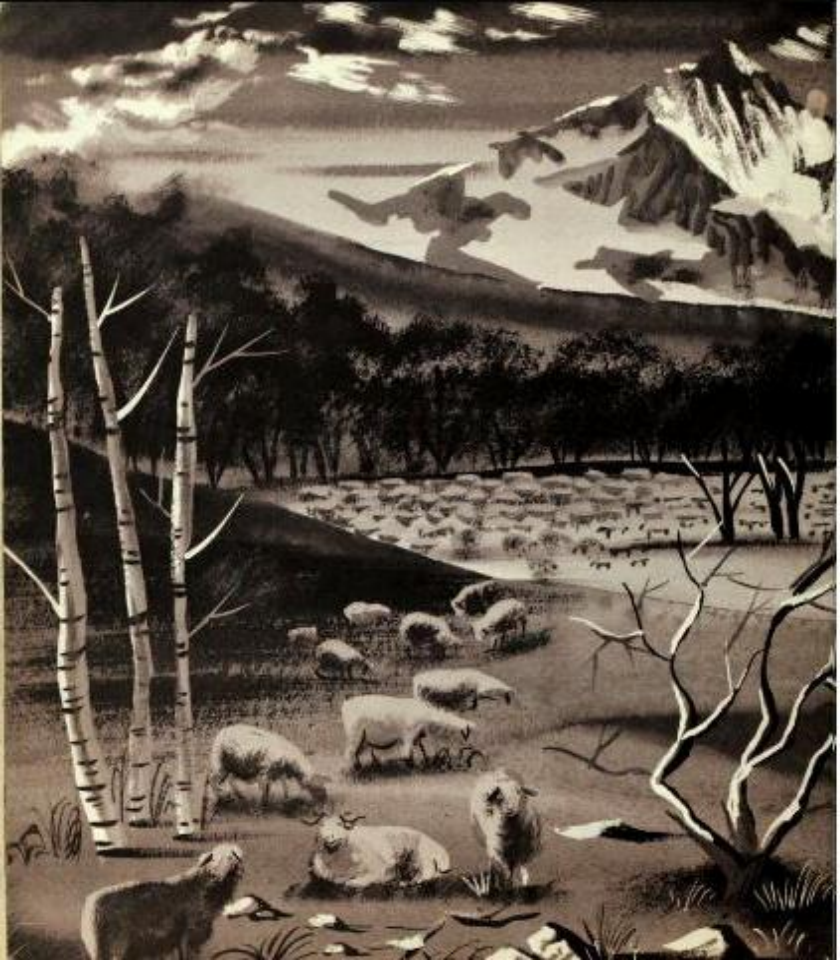

यहाँ चरागाह में कुत्ते और लोग रात भर भेड़ों की रखवाली करेंगे.

यहाँ वह सब सुरक्षित थीं.

उन पहाड़ी शेरों से सुरक्षित थीं जो शिकार की तलाश में ऊपर चट्टानों में रात भर घूमते रहते थे.

ऊँचे पहाड़ों की ठंड से रात में सुरक्षित थीं. नीचे भेड़ें सिमट कर एक साथ रहती थीं. यहाँ इकट्ठी होकर वह एक गर्म कंबल समान हो जाती थीं.

और नीचे घाटी में वह उन बादलों की गड़गड़ाहट से और कड़कती बिजली से सुरक्षित थीं जो ऊपर चट्टानों पर बरसते थे.

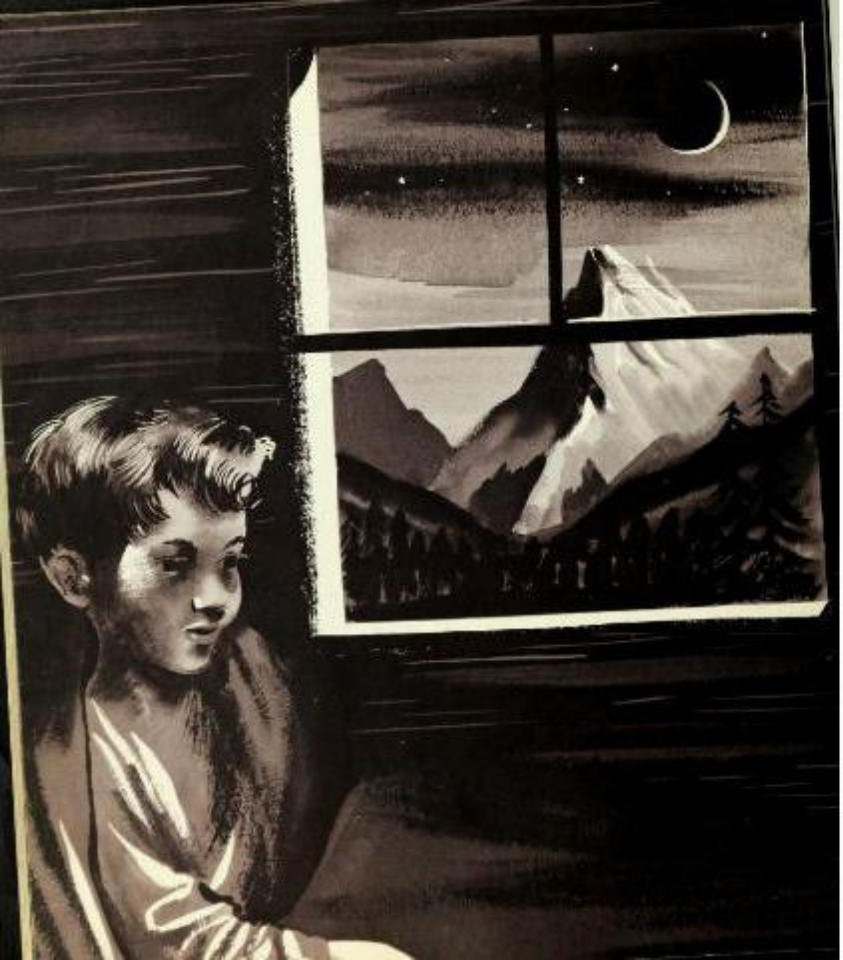

तारे जगमगाने लगे और ठंडी हवा बहने लगी. नन्हा गड़रिया सोने के लिए बिस्तर में लेट गया लेकिन वह सोया नहीं. वह सोचता रहा :

मेरी काली भेड़ ऊपर पहाड़ में है. उसे मेरी ज़रूरत होगी. और उसने अपने आप से कहा-एक भेड़ भटक ही जाती है. जो तुम कर सकते थे वह तुम कर चुके हो. सुबह तक प्रतीक्षा करो और तब काली भेड़ तुम्हें मिल जायेगी. सुबह तुम्हें तुम्हारी खोया हुआ छोटा मेमना मिल जायेगा.

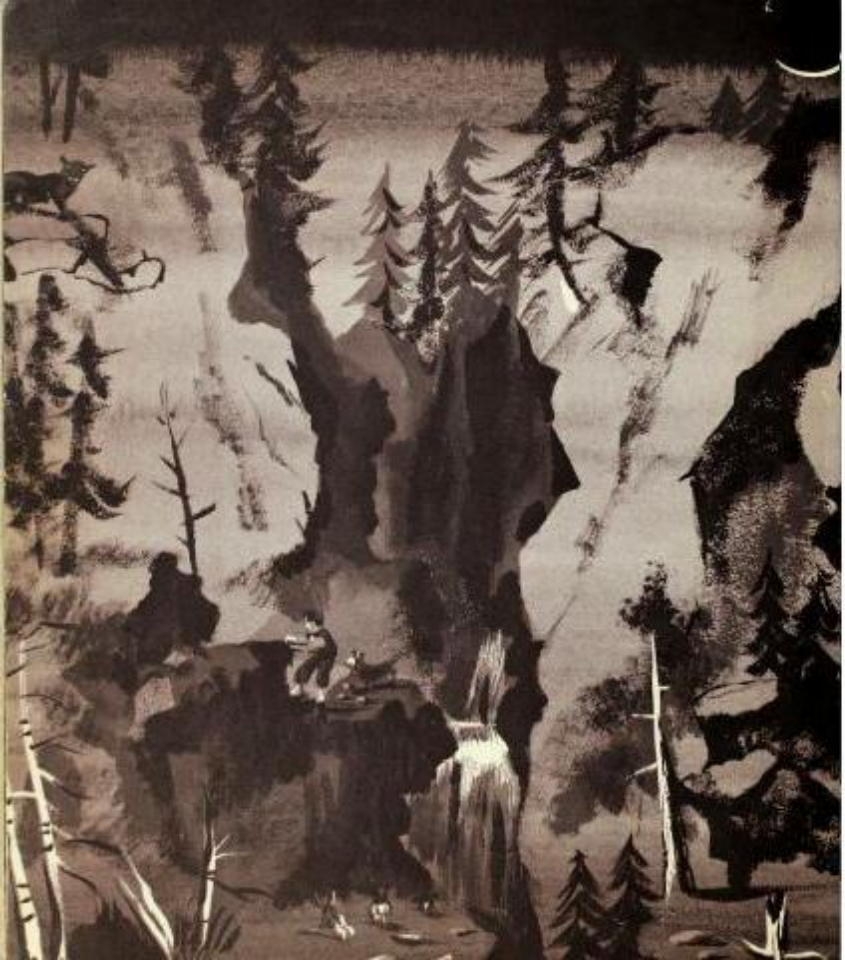

लेकिन नन्हा गड़रिया सो न पाया. और छाया के समान, वह और उसका कुत्ता चुपके से घर से बाहर आए और उस ठंडी रात में, तारों के प्रकाश में, वापस पहाड़ पर चढ़ने लगे.

अपने आस-पास उन्होंने पहाड़ी खरगोशों की धीमी आवाज़ें सुनीं और पहाड़ के एक तरफ पत्थरों और कंकड़ों के नीचे गिरने की आवाज़ें सुनीं और अंधेरे में छोटे जानवरों के यहाँ-वहाँ भागने की आवाज़ें सुनीं,

और ऊपर पहुँच कर उन्होंने पहाड़ी शेर की दहाड़ सुनी.

लेकिन नन्हे गड़रिये को, अपने लिए नहीं, काली भेड़ के लिए अधिक डर लग रहा था. और वह ऊपर चढ़ता गया ऊपर जहाँ नुकीली चोटियाँ थीं और तारे थे.

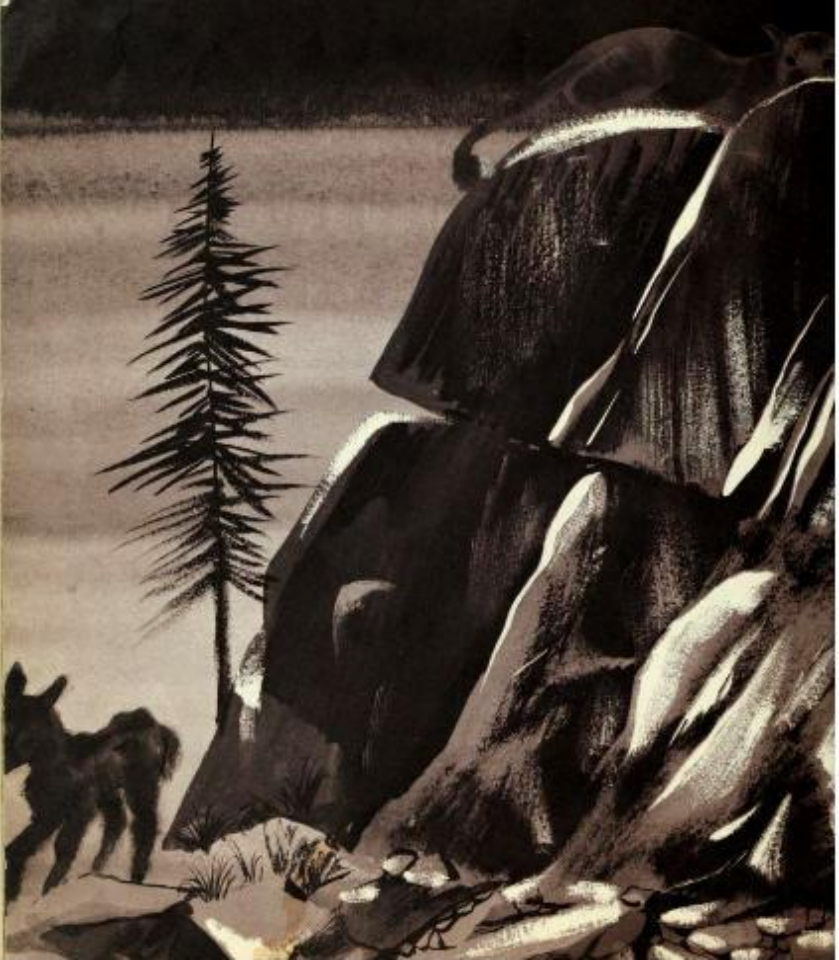

और फिर वह ऊपर उस घाटी में पहुँच गया जहाँ उसने काली भेड़ को खोया था. उसे शेर के भागने की और मेमने के चिल्लाने की आवाज़ सुनाई दी.

उसके कुत्ते ने भी यह आवाज़ें सुनीं. फिर पत्थरों पर उठा-पटक की आवाज़ आई जब रात के अँधेरे में कुत्ते ने शेर को भगा दिया.

फिर भेड़ के चिल्लाने की धीमी आवाज़ आई और छोटा, काला मेमना ठंडी, धुँधली चट्टानों के पास खड़ा था.

छोटा खोया हुआ मेमना मिल गया था.

नन्हे गड़रिये ने छोटे, काले मेमने को उठा लिया और अपने हाथों में पकड़ कर उसे पहाड़ से नीचे झुंड में ले आया. और वह रात में यह गीत गाने लगा-

ओह, पवन, धीरे चलो मेरी भेड़ों पर
शेर से दूर
और मेमने के ऊपर
धीरे चलो, धीरे चलो.

घास के ऊपर
और सुंदर फूलों पर भी
धीरे चलो, धीरे चलो.

ओह, पवन, धीरे चलो नीले आकाश तले
सफेद बर्फ के ऊपर
और काली भेड़ो पर.
धीरे चलो, धीरे चलो.